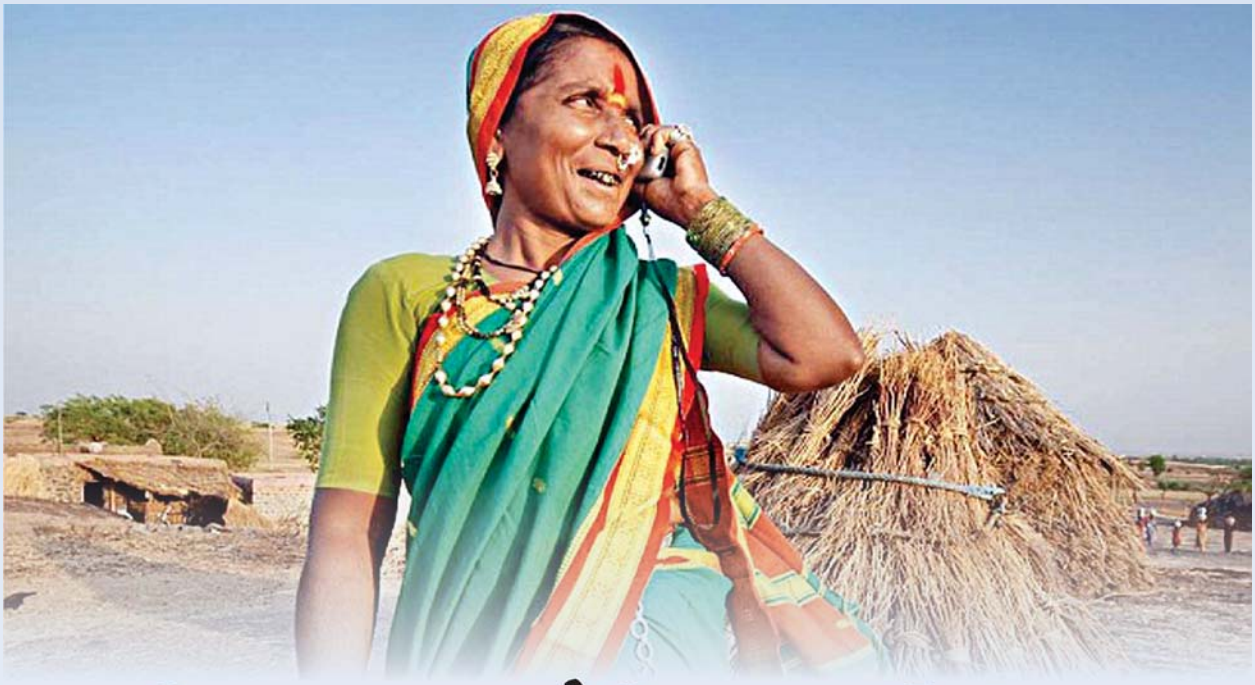

विज्ञान का वैश्विक परिपेक्ष्य

डॉ. कृष्ण कुमार मिश्र

वरिष्ठ विज्ञान लेखक। होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र में रीडर। विज्ञान पर उनकी कुल पंद्रह पुस्तकें तथा दो सौ से ज्यादा लेख प्रकाशित। 'राजभाषा भूषण' तथा 'डॉ. होमी जहाँगीर भाभा पुरस्कार' सहित अनेक पुरस्कारों से सम्मानित।

कहते हैं, आज का युग विज्ञान का युग है। वह इसलिए कि विज्ञान आज हमारे जीवन में कमोबेश सर्वत्र व्याप्त है। वह खेतों, खलिहानों, से लेकर हमारे घर के चूल्हे चौकों तक पहुंच गया है। हमारे जीवन का शायद ही कोई क्षेत्र बचा है जहां विज्ञान ने अपनी पहुंच न बना ली हो। शिक्षा, स्वास्थ्य, चिकित्सा, आहार-विहार, पोषण, सूचना, संचार, यातायात, परिवहन, कृषि, वित्त, वाणिज्य, सभी में विज्ञान ने अभूतपूर्व भूमिका निभायी है। विज्ञान ने मनुष्य को जीवन की बुनियादी जरूरतें, जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, बिजली, पानी, सड़क, इत्यादि मुहैया कराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। दुनिया को एक विश्व-ग्राम का रूप देने में तो विज्ञान की बहुत बड़ी भूमिका है। आज एक क्लिक पर दुनिया की किसी व्यक्ति, वस्तु या परिघटना के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने में विज्ञान ने साधन उपलब्ध करा दिया है। इंटरनेट से समूचे भूमंडल को आपस में जोड़ दिया है।

पच्चीस-तीस बरस पहले इस बात की कहाँ कल्पना थी कि एक समय ऐसा भी बहुत शीघ्र आएगा जब देश में करीब हर हाथ में स्मार्ट फोन होगा। पहले तार वाले फोन होते थे, वही अब मोबाइल टेलीफोनी का जमाना है। एक समय घर में फोन होना एक बहुत बड़ी बात माना जाता था। यह एक तरह से हैसियत का द्योतक माना जाता था। जनमानस के लिए सूचना तथा मनोरंजन के साधन के तौर

पर रेडियो था। मनपसंद फिल्मी गाने सुनने के लिए फरमाइशी पत्र डाक से आकाशवाणी केन्द्रों को भेजे जाते थे। लोग तय समय पर चौपाल में जुटकर अपने पसंदीदा गाने का इंतजार करते थे। लोगों के पास तब बहुत समय हुआ करता था। अब पसंदीदा गाने के लिए इंतजार जरूरी नहीं रह गया है। वह हमारे स्मार्ट फोन में ही निहित है। जब, जहां चाहें, अपनी पसन्द का गीत, गजल, भजन, संगीत, प्रवचन, व्याख्यान, सुन सकते हैं। सोर्स से अपने मोबाइल की हार्डडिस्क में डाउनलोड कर सकते हैं, और फिर फुरसत से सुन सकते हैं। शैक्षिक कोर्स से संम्बन्धित तमाम विषयों पर लेक्चर्स, प्रस्तुतियां, नोट्स, वगैरह वेबसाइटों पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

पहले के जमाने में लोग देश-परदेस के सगे सम्बन्धियों का कुशलक्षेम लेने के लिए डाक के जरिये चिट्ठी भेजते थे। फिर जवाब का इंतजार करते थे। इसमें करीब दो हफ्ते तो लग ही जाते थे। तार यानी टेलीग्राम समाचार भेजने का द्रुत साधन जरूर था। लेकिन वह बहुत जरूरी, तथा प्रायः आपातकालीन स्थितियों में लोगों द्वारा प्रयुक्त होता था। तार की भाषा अंग्रेजी हुआ करती थी। तार भेजना खर्चीला भी होता था। उसका मतलब गांव-देहात में लोगों को बड़ी मुश्किल से समझ में आता था। उसे पढ़वाने के लिए किसी भाषा के समझने वाले की खोज की जाती, तब अर्थ खुलता था। ये सारी बातें ज्यादा नहीं, तीन से चार दशक पहले की ही हैं। टेलीग्राम कब का इतिहास हो चुका है। डाक विभाग ने टेलीग्राम सेवा को वित्तीय तथा व्यावहारिक कारणों से बन्द कर दिया है। नये वर्ष पर मित्रों, सगे-सम्बन्धियों को डाक से ग्रीटिंग कार्ड भेजने का चलन था। लेकिन समय ने इन सभी को आज इतिहास बना दिया है।

विज्ञान की वैश्विकता के निहितार्थ

जिस विज्ञान ने मानव समाज को इतने साधन सुलभ करा दिये, वह विश्वबंधुत्व की भावना को प्रोत्साहित करने में क्या भूमिका रखता है। समग्र विश्व के ताने बाने को समृद्ध करने में इसकी कोई भूमिका बनती है क्या? एक चिंतन पद्धति के रूप में तार्किकता, तथा वस्तुनिष्ठता वैश्विक समाज में क्या कोई स्थान बना पायी है? पहली नजर में विज्ञान एक अमूर्त तथा मूल्यनिरपेक्ष विषय लग सकता है। लेकिन क्या हमारे वास्तविक जीवन में विज्ञान निरपेक्ष है? क्या उसने विश्वग्राम बनाने की प्रक्रिया में संकरी तथा तंग विचारधाराओं तथा दकियानूसी मान्यताओं को दरकिनार करने में सफलता पायी है। क्या विज्ञान ने समाज में व्याप्त रूढ़ियों को तोड़ने में कारगर सफलता पायी है? या फिर क्या उसने समाज में वैश्विक दृष्टिकोण जगाने में सार्थक भूमिका निभायी है? क्या विज्ञान ने लोगों को परस्पर जोड़ दिया है? सोशल मीडिया के आभासी साधनों ने व्यक्ति को व्यक्ति से विमुख कर पारस्परिक सरोकारों से दूर नहीं धकेल दिया है। घर तो दूर, सार्वजनिक स्थानों में भी व्यक्ति नितांत अकेला नहीं हो चला है। बस, ट्रेन, हवाई यात्रा के दौरान क्या वह अपने सहयात्री के संग, साथ, संवाद की जीवंतता से दूर नहीं हो चला है। अनुभव तो यही साबित करता है कि विज्ञान की डिजिटल युक्तियों ने व्यक्ति को प्रायः आत्मकेंद्रित बना दिया है। कहने के लिए वह समाज का हिस्सा है लेकिन समाज के सरोकारों से उस तरह जुड़ा नहीं रह पा रहा है। जानकार बताते हैं कि मनुष्य सोशल मीडिया के जरिये डिटिजल दुनिया के आभासी लोक में विचरण करने का आदी होता जा रहा है।

विज्ञान एक विधा के तौर पर प्रकृति एवं ब्रह्माण्ड के भौतिक सत्य का अन्वेषण है। इसके अंतर्गत हम प्रकृति के नियामक घटकों, उनके परस्पर सम्बन्धों, तथा उन्हें निर्धारित करने वाले भौतिक नियमों का अध्ययन करते हैं। इन बातों का व्यक्ति के सामाजिक परिवेश, या उसके जीवन के सांस्कृतिक मूल्यों से कोई लेना देना नहीं है। प्रायः ऐसा कहा जाता है कि विज्ञान अपनी मूल प्रकृति में व्यक्तिनिष्ठ नहीं है। लेकिन समाजविज्ञानियों का कहना है कि एक ज्ञानानुशासन के रूप में विज्ञान मानव समाज के परिप्रेक्ष्य में पूर्णतः निरपेक्ष नहीं है। जब मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह एक समुदाय का हिस्सा है। फिर विज्ञान की खोज, तथा शोध में लगे विज्ञानी भला निरपेक्ष कैसे रह सकते हैं। विज्ञान भी सामाजिक विधा है, वह समाज के व्यापक हितों को मद्देनजर संचालित होता है। वह व्यक्तिनिष्ठता से भला दूर कैसे हो सकता है।

वैज्ञानिक तरक्की और भौतिकवाद

विज्ञान की तरक्की के साथ समाज में भौतिकवाद तेजी से बढ़ा है। समाज में वस्तुओं तथा साधनों की बेशुमार आमद हुई है। इसके चलते बाजारवाद तथा पूंजीवाद के गहरे जड़ें जमा ली हैं। तरह-तरह की वस्तुओं, तथा सेवाओं का प्रलोभन दिया जा रहा है। बाजारवाद लोगों को ज्यादा से ज्यादा खरीदने को ललचा रहा है। विज्ञापनी दुनिया यह बात जेहन में पैठाने की पुरजोर कोशिश करती रही है कि ज्यादा से ज्यादा जुटा लेने, खपत कर लेने से जीवन सुखमय हो जाएगा। इससे समाज तथा लोगों के बीच हैसियत बढ़ जाएगी। धनिक समाज के अपनी दौलत के अशिष्ट प्रदर्शन से समाज का ताने-बाने प्रभावित हुआ है। समाज में फिजूलखर्ची की प्रवृत्ति बढ़ी है। धनाढ्य वर्ग की देखा-देखी मध्यम वर्ग की आर्थिक हालत खस्ता होती जा रही है। अब तो जरूरतों को सीमित रखने की बात कहीं हो ही नहीं रही है। अर्थप्रधान समय में किफायत की बात करना जैसे बेमलतब-सा हो गया है। राष्ट्र के विकास को हर महीने बिक रही कारों की संख्या के पैमाने पर आंका जा रहा है। शहरों में मोटरकारों के रखने, पार्क करने की जगह ही नहीं बची है। सड़कों पर लम्बा-लम्बा जाम अब आम हो चला है। लोगों को कर्ज लेकर खरीदारी के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। आम आदमी की श्रम से अर्जित पूंजी पर मुनाफाखोरों की दृष्टि है। ऐसे भयावह दौर में प्रचण्ड भौतिकवाद का नाग फन उठाये फुफकार रहा है। कोरोना के वैश्विक संकट के दौरान दुनिया भर में मध्यम वर्ग सबसे ज्यादा प्रभावित हुआ था। इसके विपरीत दुनिया में पूंजीपतियों की संपत्ति और उनकी संख्या में भी अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी हुई। संपन्न तथा विपन्न वर्ग के मध्य का फासला उत्तरोत्तर बढ़ता रहा है।

चिंतन की चिरंतन परंपरा

इस प्रश्न में गहरे उतरने के पहले हमें विज्ञान की पृष्ठभूमि को समझना होगा। पुराने जमाने के चिंतक, विचारक, मूलतः प्रकृतिशास्त्री थे। वे अपने समय के दार्शनिक थे। वे प्रकृति के घटकों, अवयवों, तथा उनकी कार्यप्रणाली को स्थूल देखते हुए निष्कर्ष निकालते थे। इसमें महर्षि कणाद, कपिल मुनि, चार्वाक, वगैरह का जिक्र किया जा सकता है। यूनान की समृद्ध परंपरा में सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, इत्यादि के नाम बहुत जाने पहचाने हैं। वे अपने समय के वैज्ञानिक कहे जाते हैं। लेकिन जिस विज्ञान की बात हम कर रहे हैं, वह आधुनिक विज्ञान है। इसकी शुरुआत

यूरोपीय पुनर्जागरण के साथ हुई है। इस दौरान अरस्तूवादी विचारधारा का प्रभाव समाप्त होना शुरू हुआ। प्रयोगों, प्रेक्षणों तथा तर्कशील चिंतन पर आधारित बातों का नया जमाना शुरू हुआ। दूरबीन के आविष्कार के साथ दुनिया की अवधारणा बदल गयी। इटली के गैलीलियो ने प्रायोगिक विज्ञान पर बल दिया, तथा महत्वपूर्ण खगोलीय खोजों के लिए दूरबीन का आविष्कार किया। महान सार्वकालिक वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टाइन ने गैलीलियो को आधुनिक विज्ञान का जनक कहा है। चूँकि विज्ञान का लक्ष्य मनुष्य को बनी बनायी अवधारणाओं से इतर तार्किक धरातल पर प्रकृति को समझना था। इसलिए शुरुआती दौर में आधुनिक विज्ञान को चर्च तथा पादरियों के जबर्दश्त विरोध का सामना करना पड़ा था। विज्ञान का उद्देश्य मनुष्य को धर्म, परलोकवादी मान्यताओं से मुक्त करना था। उसका ध्येय मनुष्य को स्वायत्त जीवन की दिशा में ले जाना था।

विज्ञान- शोषण और उत्पीड़न का औजार

विज्ञान की सार्वभौमिकता तथा मूल्य-निरपेक्षता को लेकर तमाम तरह के सवाल विद्वानों द्वारा समय -समय पर उठाये जाते रहे हैं। बहुत से समाजविज्ञानी, आधुनिक विज्ञान को उपनिवेशवाद के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। पश्चिमी देशों, विशेष करके ब्रिटेन ने विज्ञान तथा प्रोद्योगिकी की तरक्की के साथ तमाम साधन जुटा लिए। वह एशिया तथा अफ्रीका के अनेक देशों पर काबिज हो गया। उसके पास बेहतर जहाजें, संचार प्रणाली, अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद,

तथा साजो-सामान था। इसलिए उसने अपने साधनों को बुद्धि-कौशल से प्रयोग करते हुए दुनिया के बहुत बड़े भूभाग पर कब्जा कर लिया। तमाम देशों को अपना उपनिवेश बना लिया। हमारा देश स्वयं उस प्रक्रिया से अछूता नहीं रहा। दो सदी तक हम दासता में रहे। लम्बे संघर्ष के बाद उससे मुक्त हुए, स्वराज पाए। इस दौरान शोषण तथा दमन का घनघोर दुष्चक्र चला। लोग शोषण की चक्की में पिस गये। विरोध करने वालों को सरेआम फांसी पर लटका दिया गया। बहुतों का कालेपानी की सजा दी गयी। मनमाने कर लगाये गये, कृषि को अंग्रेजों के फायदे के लिए बना दिया गया। कच्चे माल की आपूर्ति का साधन बन गयी भारत की खेती। किसान गरीबी से जार-जार, लाचार हो गये। स्वदेशी उद्योगों को जान बूझकर मार दिया गया। उपनिवेशवाद आर्थिक लाभ का तंत्र था। कहा जाता है कि अगर हमारे पास अंग्रेजों के समतुल्य साजोसामान तथा संचार के साधन होते तो हम 1857 के संघर्ष में ही फिरंगियों से आजाद हो गये होते। अफ्रीका के कई देश तो बीसवीं सदी के अंत तक औपनिवेशिक गुलामी से जूझते रहे, तब जाकर स्वतंत्र हो सके। एक समय तो कहा जाता था कि अंग्रेजी साम्राज्य में सूरज अस्त नहीं होता था। भूमंडल के इतने व्यापक हिस्से पर उनका शासन था। उसके मूल में विज्ञान तथा तकनीकी की ताकत थी। इसी बलबूते अमेरिका के मूल निवासियों, रेड इंडियनों पर अमानवीय जुल्म हुए। उन्हें अपने ही भूभाग से समाप्त कर दिया गया। आज के उस कथित सभ्य समाज का इतिहास बहुत स्याह है। इस बात से किसी को इंनकार नहीं हो सकता। ये सभी बातें दर्ज इतिहास हैं तथा इतिहास की कटु सच्चाई है।

लोककल्याण और विज्ञान का ध्येय

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने सन् 1946 में अपनी पुस्तक, 'द डिस्कवरी आफ इंडिया' में वैज्ञानिक मिजाज (Scientific temper) शब्द का प्रयोग किया था। इससे उनका आशय अपने रोजमर्रा के जीवन में वैज्ञानिक ढंग से सोचने, कार्य करने तथा व्यवहार करने से था। यह हमारे प्रकृति तथा परिवेश में हो रहे घटनाक्रम को तार्किक नजरिये से देखने से जुड़ा है। इससे कोई व्यक्ति तार्किकता से निर्णय लेता है। लेकिन वही इंसान तकनीकी तरक्की के चलते भौतिकतावाद तथा बाजारवाद से प्रेरित होकर साधनों का गुलाम बनने की ओर अग्रसर है। अब प्रश्न उठता है कि विज्ञान आम जन को सशक्त कैसे कर सकता है। यह लोक कल्याण के क्षेत्र में कैसे योगदान दे सकता है। इस बारे में महात्मा गांधी के विचार भारतीय समाज के लिए मार्गदर्शक हो सकते हैं। 'हिन्द स्वराज', तथा 'नई तालीम' में उनकी बातें हमारे लिए पथप्रदर्शक हो सकती हैं। गांधी जी मानते थे कि विज्ञान तथा वैज्ञानिक का कार्य मनुष्य को कष्ट तथा पीड़ा से मुक्ति दिलाना है। उनका मानना था कि विज्ञान के फल से सबका भला हो। वह किसी वर्ग विशेष के लिए अन्य लोगों के शोषण का औजार न बन जाए। वह बाजारवाद को प्रश्रय देने वाला न हो, न ही राज्य को जरूरत से ज्यादा ताकत देने वाला हो। विज्ञान तथा उसके साधन ऐसे हों जो व्यक्ति की स्वायत्तता तथा संप्रभुता को समृद्ध करने वाले हों। गांधीजी मूल्यपरक विकास के समर्थक थे।

महात्मा गांधी मानते थे कि वैज्ञानिक युक्तियां इंसान के लिए मददगार हों, लेकिन ऐसा न हो कि हम इनके अधीन हो जाएं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, विकास तथा मानव समाज के मध्य के सम्बन्धों को बारीकी से देखने समझने की जरूरत है। समाज में शैक्षिक सुधार से ही विज्ञानसम्मत सोच वाले

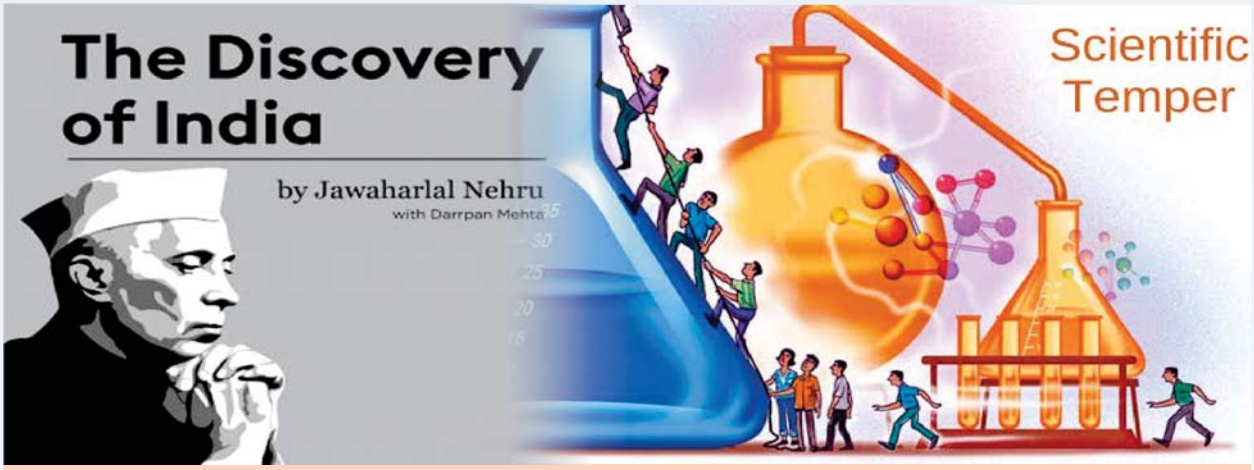

महान भौतिकीविद् प्रो. स्टीफन हॉकिंग धरती पर जीवन तथा सभ्यता के भविष्य को लेकर सजग तथा चिंतित थे। उन्होंने धरती पर इंसानी सभ्यता के भविष्य को लेकर कई महत्वपूर्ण बातें कही थीं। वे सुविख्यात ब्रह्माण्डविज्ञानी थे जिन्होंने ब्लैकहोल तथा बिगबैंग थ्योरी में बुनियादी शोधकार्य किए थे।

समाज का निर्माण संभव है। सिर्फ तकनीकी साधनों तथा मशीनों के बूते समाज में वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा नहीं दिया जा सकता। विगत कुछ एक दशकों के अनुभव इस बात की पुष्टि करते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक, डिटिजल, तथा सोशल मीडिया के विविध प्लैटफॉर्म उपलब्ध हो जाने के बावजूद वैज्ञानिक साक्षरता में कोई क्रांतिकारी बदलाव नहीं आया है। कहीं-कहीं तो सूचना तथा संचार तकनीक से दकियानूसी तथा बेबुनियाद बातों, और अंधविश्वासों को बढ़ावा ही मिला है।

विज्ञान के केन्द्र में हो मनुष्यता

समाज में विज्ञान साक्षरता जरूरी है। जन मानस में न्यूनतम विज्ञान साक्षरता की जरूरत की अवधारणा लम्बे समय से रही है। इससे विज्ञान सम्मत सोच वाले समाज का निर्माण हो सकता है। दुनिया के लिए जरूरी है कि विज्ञान का उपयोग मानव समाज का उदात्त हित साधने में किया जाए। ज्ञान की अन्य विधाओं के साथ यह भी एक विधा है। इस विधा को किसी विशेषाधिकार वाली प्रवृत्ति नहीं माना जा सकता। लेकिन जैसा कि ब्रिटेन के प्रोफेसर ए. वी. हिल ने कहा है कि बिना समाज के नैतिक धरातल को मजबूत किये सर्वकल्याण की बात करना भ्रामक है। एडिनबरा के ड्यूक ने पूछा था कि अगर मनुष्य ही जीवित न रहे, तो फिर विज्ञान का क्या उपयोग? यानी विज्ञान का परम उद्देश्य मानव कल्याण ही होना चाहिए। वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति ने अनपेक्षित कठिनाइयों तथा खतरों को जन्म दिया है। स्वास्थ्य, चिकित्सा तथा पोषण से जुड़े विज्ञान ने बेशक मनुष्यों की जीवन प्रत्याशा को बढ़ाया है। भौतिक तौर पर जीवन की गुणवत्ता में सुधार हुआ है। कोरोना की वैश्विक महामारी के दौर में रिकॉर्ड समय में तमाम वैक्सीन विकसित करके विज्ञान ने लाखों जिंदगियां बचा लीं। लेकिन जैवप्रौद्योगिकी के कारण जैविक अस्त्र के रूप में तमाम विषाणु तथा रोगाणु तैयार करके दुनिया ने धरती पर जीवन को खतरे में डाला है। जैविक युद्ध के कितने खतरनाक नतीजे होंगे, इसकी सहज कल्पना की जा सकती है।

धरती पर मानव सभ्यता के भविष्य का यक्ष प्रश्न

विश्व भर के तमाम वैज्ञानिक इस धरती पर मानव सभ्यता के भविष्य को लेकर अपनी राय तथा चिंता व्यक्त करते रहे हैं। आज जलवायु परिवर्तन तथा प्रदूषण के चलते समूचा मानव समाज पीड़ा तथा अनिश्चितता से गुजर रहा है। धरती पर मानव सभ्यता को दुनिया भर में चिंता व्यक्त की जाती रही है। महान भौतिकीविद् प्रो. स्टीफन हॉकिंग धरती पर जीवन तथा सभ्यता के भविष्य को लेकर सजग तथा चिंतित थे। उन्होंने धरती पर इंसानी सभ्यता के भविष्य को लेकर कई महत्वपूर्ण बातें कही थीं। वे सुविख्यात ब्रह्माण्डविज्ञानी थे जिन्होंने ब्लैकहोल तथा बिगबैंग थ्योरी में बुनियादी शोधकार्य किए थे। वर्ष 2016 में बी.बी.सी. को दिये गये अपने इंटरव्यू में उन्होंने चेताया था कि इंसान के

धरती पर रहने का समय पूरा होता जा रहा है। अब उसे अपने लिए दूसरी धरती खोज लेनी चाहिए। यह कार्य इंसान को अगले 100 वर्षों में कर लेना चाहिए। उनका मानना था कि जलवायु परिवर्तन, मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है। उनका कहना था कि धरती की सेहत बुरी तरह बिगड़ चुकी है। यदि बहुत जल्दी इसे बचाने के कदम नहीं उठाए गये तो बाद में चलकर वह ऐसी स्थिति में पहुंच जाएगी कि हम तब चाहकर भी कुछ नहीं कर पाएंगे। फिर लाख उपाय करके भी इस धरती को नहीं बचाया जा सकेगा। उन्होंने लोगों को खबरदार किया था कि तकनीकी विकास, विशेष करके कृत्रिम बुद्धि (आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स) शायद पृथ्वी पर मानव सभ्यता की अंतिम उपलब्धि साबित होगी।

निष्कर्ष

इस विमर्श से यह बात स्पष्ट होती है कि सिर्फ वैज्ञानिक तरक्की से मानवता का कल्याण सुनिश्चित नहीं किया जा सकता है। इससे विश्व का भला नहीं हो सकता। जरूरी है कि विज्ञान मूल्यपरक हो, नीतिपरक हो, उसका चेहरा मानवतावादी हो। वह सर्वमंगल की भावना से संपृक्त हो। उसके मूल में विश्वकल्यान होना चाहिए। वैज्ञानिक शोध में व्यक्ति तथा मानवसमाज के प्रति समत्व तथा ममत्व का भाव हो। तभी वह समूची दुनिया का सर्वांगीण भला कर पाएगा। हर व्यक्ति अपने को विज्ञान से लाभान्वित होता हुआ पाएगा। विज्ञान तथा उसके साधन चंद लोगों के लिए बाकियों के शोषण का माध्यम कदापि न बने। विज्ञान पूंजीवाद, बाजारवाद, तथा भौतिकतावाद को पोषित करने वाला तो बिलकुल ही न हो। वह धरती पर मौजूद समस्त जड़ चेतन को एक संयुक्त इकाई मानकर चले। वह किसी लोभ लाभ की संकीर्ण प्रवृत्त से बचे। अपने चेहरे को मानवीय बनाए। इससे समाज में समरसता तथा सौहार्द्र बना रहेगा। बिना शांति, सौहार्द्र, तथा समरसता के मानव समाज भला सुखी कैसे रह सकता है?

इस महत उद्देश्य में शिक्षा की बड़ी भूमिका है। शिक्षा ऐसी हो जो प्रगतिशील हो, जीवन की जड़ता को दूर करे, मनुष्य को उदार और सहिष्णु बनाये। मनुष्य इस धरा पर चीजों तथा घटनाओं को समग्रता में देखे। वह प्रकृति तथा पर्यावरण के परस्पर सरोकारों के प्रति संवेदनशील बने। जरूरी है कि शिक्षा लोगों में विज्ञान सम्यक दृष्टि पैदा करे, जिसमें मनुष्य छुद्र तथा संकीर्ण विचारों से ऊपर उठे, वैश्विक दृष्टिकोण से सोच सके। मनुष्य की गरिमा, उसके जीवन मूल्य मानव समाज में सर्वोपरि हों। यदि पृथ्वी पर ऐसा तंत्र तथा उदार विचार समाज में विकसित तथा स्थापित हो सके, तो निश्चित रूप से यह दुनिया बहुत बेहतर जगह बन सकेगी। यह सूत्र समूचे विश्व के लिए एक मंत्र की तरह है। इससे अंतरराष्ट्रीय शांति तथा सद्भाव बनाये रखने में मदद मिलेगी। विश्वकल्याण के व्यापक दृष्टिकोण से अभिसिक्त आधुनिक विज्ञान लोगों में विश्वबंधुत्व की भावना को संपोषित करेगा। वास्तव में सर्वे भवन्तु सुखिनः, विज्ञान का मंत्र-वाक्य होना चाहिए।

vigyan.lekhak@gmail.com

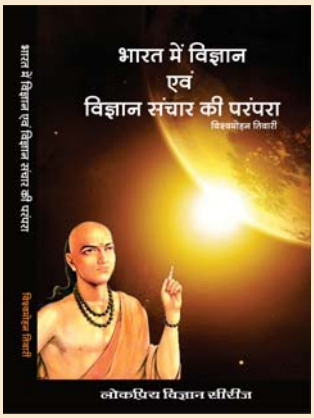

भारत में विज्ञान एवं विज्ञान संचार की परंपरा

लेखक : विश्वमोहन तिवारी
प्रकाशक : आईसेक्ट प्रकाशन
मूल्य : 195/-

विश्वमोहन तिवारी की प्रसिद्ध कृतियां विज्ञान का आनंद, बोधिवृक्ष के नीचे, आनंद पक्षी निहारन का, सरल वैदिक गणित, खाड़ी युद्ध 91, यात्राओं का आनंद, नई दिशा, सुनो मनु, हमारे कलाम, उपग्रह के बाहर भीतर, इलेक्ट्रॉनिकी युद्ध कला आदि हैं। उन्हें आत्माराम पुरस्कार, मेघनाथ साहा पुरस्कार, सहस्राब्दि हिन्दी सेवी सम्मान, इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार, रक्षा मंत्रालय पुरस्कार, राहुल सांस्कृत्यान पुरस्कार, राष्ट्र गौरव सम्मान, विवेकानंद पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार, आर्य भट्ट सम्मान, तकनीकी मौलिक लेखन पुरस्कार, विज्ञान भूषण सम्मान, हिन्दी संवाहक सम्मान आदि पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

प्रस्तुत किताब में उन्होंने भारत में विज्ञान की परंपरा और वर्तमान स्थिति पर गंभीरता से विचार किया है। भारत में विज्ञान की परंपरा का प्रारम्भ वैदिक युग से ही हो जाता है। सनातन धर्म मूलतः विज्ञान का विरोध नहीं करता, क्योंकि उसकी सोच विज्ञान संगत है। इस पुस्तक में विज्ञान तथा विज्ञान संचार के विभिन्न आयामों को विभिन्न दृष्टियों से प्रस्तुत किया गया है।